भगवती महासरस्वती
पंचोपचार पूजन विधान
" धर्मशास्त्राचार्य " पं प्रियम उपाध्याय "शास्त्री" (वैदिक)
©Hanuman_dasa

प्रश्न-पंचोपचार पूजन किसे कहते है ?

उत्तर- गन्ध (चंदन), पुष्प (फूल), धूप, दीप एवम नैवेद्य के द्वारा पूर्ण भावना युक्त होकर देवी अथवा देवता का पूजन करना पंचोपचार पूजन कहा जाता है।

पूजन विधि

सर्वप्रथम प्रातः काल उठकर अपने नित्य कर्म को करने के उपरांत स्नान आदि से निवृत्त होकर भगवान भाष्कर (सूर्य) को जल अर्पित करे एवम शुद्ध वस्त्र धारण कर पूजन कक्ष में प्रवेश करें तथा आसन लगाकर बैठ जाए एवम तीन बार आचमन करें

"ॐ/औम केशवाय नमः"
"ॐ/औम नारायणाय नमः"
"ॐ/औम माधवाय नमः"

गोविन्दाय नमः कहकर होठ पोछ लेवे तथा हृषीकेशाय नमः कहकर हाथ धो लेवे ।

शिखा बंधन -

"ब्रम्ह वाक्य सहस्रेण शिव वाक्य शतेन च ।
विष्णोर्नाम सहस्रेण शिखा ग्रंथि करोम्यहम ।।"

पुनः शिखा वंदन -

दाहिनी हाथ से जल शिखा सूत्र पर स्पर्श कराकर मन्त्र कहे -

" चिद्रूपिणि! महामाये! दिव्य तेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि ! शिखा मध्ये तेजो वृद्धिम कुरुष्व मे ।।"

चंदन तिलक

"तिलकं च महत्तपुण्यं पवित्रं पाप नाशनम ।
आपदां हरते नित्यं ललाटे हरि चन्दनम ।।"

पवित्री (पैती) दाहिनी हाथ की अनामिका उंगली में धारण करे।

अपने शरीर और पूजन सामग्री पर जल छिड़के तथा आसन पर जल छिड़क कर प्रणाम करते हुए पुनः हाथ मे जल अक्षत फूल कुश लेकर संकल्प करें -

"हे आद्याशक्ति मां भगवती सरस्वती हमारे सहित समस्त विश्व का कल्याण करें, सभी के अंदर नव चेतना और ज्ञान का भंडार प्रदान करें जिससे हम सभी धर्म के मार्ग पर चल सके "

कुशा जल अक्षत फूल छोड़ दे

पुनः देवी के सामने एक फूल लेकर हाथ जोड़कर गुरुदेव का ध्यान करे और एक एक फूल उठाते जाए और देवी देवताओं का ध्यान कर अर्पित करते जाए

उदाहरण -

१) गुरुदेव का ध्यान करके गुरु चित्र अथवा पादुका अथवा देवी के चरणों में अर्पित करे।

२) गौरी गणेश जी का ध्यान करके पुष्प गौरी गणेश जी को अर्पित करे अथवा देवी को ही अर्पित करे

३) कलश का ध्यान करके पुष्प अर्पित करें।

४) षोडश मात्रिका का ध्यान करके पुष्प अर्पित करें।

५) सप्तघृत मातृका का ध्यान करके पुष्प अर्पित करे।

६) सर्वतोभद्र का ध्यान कर पुष्प अर्पित करें।

९) नवग्रह देवो का ध्यान करके पुष्प अर्पित करें।

इन सभी क्रियाओं के उपरांत पंचोपचार पूजन करें –

देवी ध्यान -

"सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणी।
विद्यारम्भ करिष्यामि सिद्धिर्भवतु में सदा" ।।

हाथ मे लिए पुष्प देवी के सामने छोड़ देवे ।

१) देवी को गन्ध अर्पित करे -

"श्रीखंडं चंदनं दिव्यं गन्धद्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चंदनं प्रतिगृह्यताम् " ॥

ॐ/औम महासरस्वत्यै नमः गन्धम समर्पयामि।

२) पुष्प देवी को अर्पित करें -

" माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थ प्रतिगृह्यताम् "।।

ॐ/औम महासरस्वत्यै नमः पुष्पम पुष्पमालां समर्पयामि ।

३) देवी को धूप दिखाए -

"वनस्पति रसोद भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आत्रेयः सर्व देवानां धूपोढ्यं प्रतिगृहयन्ताम्" ।। ॐ/औम महासरस्वत्यै नमः धूपम आघ्रापयामि ।

४) देवी को दीप दिखाए -

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया, दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्यतिमिरापहम्। भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने, त्राहि मां निरयाद् घोराद द्वीपज्योतिरनमोस्तुते"।। ॐ/औम महासरस्वत्यै नमः दीपम दर्शयामि।

५) देवी को नैवेद्य (मिठाई, फल इत्यादि) अर्पित करे--

" शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च । आहारम् भक्ष्य-भोज्यम् च नैवेद्यम् प्रति-गृह्यताम् " ॥ ॐ / औम महासरस्वत्यै नमः नैवेद्यम निवेदयामि ।

पंचोपचार पूजन के उपरांत गुरुमंत्र का 1 माला या 11 माला अथवा यथाशक्ति जप करे एवम समयानुसार अपने धर्म ग्रंथ का देवी के सामने ही अध्ययन करे एवम मां भगवती की प्रत्यक्ष भावना करें। पूजन के अंत मे आरती करे एवम देवी को प्रणाम करके पुष्प लेकर क्षमा याचना करें -

"हे !मां समस्त पूजन कर्म में जो भी त्रुटि हुई हो उसके लिए मैं क्षमा मांगता हूं, मैं न आह्वान जानता हूं न विसर्जन जानता हूं न विशेष विधि पूजा ही जानता हूं हे! आद्याशक्ति माता हमे क्षमा करें, क्षमा करें, क्षमा करें एवम अपनी कृपा दृष्टि सदैव हम सभी पर बनाये रखें"

क्षमा मांगने के उपरांत पुष्प देवी के चरणों में अर्पित कर दे एवम अक्षत एक पुष्प लेकर कहे -

"हे ! समस्त आवाहित देवी एवम देवता आप अपने स्थान को गमन करें एवम हमारे समस्त मनोवांछित कार्य सम्पन्न हो आशीर्वाद प्रदान करे "

हाथ मे लिए अक्षत फूल देवी के चरणों मे अर्पित करें तथा आसन के नीचे जल गिराकर "विष्णवे नमः तीन बार उच्चारण करके दोनों नेत्रों में और मस्तक पर जल लगाकर पूजन पूर्ण करें एवम चढ़ाए हुए प्रसाद ग्रहण करें।

विशेष नोट -

१)ॐ या औम का प्रयोग वर्ण अनुसार प्रयोग में लाये ।

२) पंचोपचार पूजन की यह अत्यंत सरल और सर्वसुलभ प्रयोग है जिन भाई बंधुओ को मन्त्र बोलने में भी कठिनता हो रही है वो मन्त्र श्लोक के नीचे लिखे समर्पित मन्त्र बोलकर ही पूजा पूर्ण कर लें।

३) शास्त्रीय वैदिक विधि के द्वारा जिन्हें षोडश उपचार आता है उन सभी बंधुओं को वैदिक विधि से ही पूजन करना चाहिए पौराणिक विधि से नही ।

षोडश मातृका

सप्त मातृका रूप